नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अधिवेशन में

कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र का व्याख्यान

वर्धा दि. 21 मार्च, 2018 : भारतीय विश्वविद्यालय संघ के दो दिवसीय अधिवेशन की शुरूआत केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ में मंगलवार 20 मार्च को हुई। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी

अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने सहभागिता की। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि हमारी चिंता का विषय यह है कि आज का छात्र समाज केंद्रित न होकर व्यक्ति केंद्रित हो गया है। इसके कारण उसके व्यक्तिगत जीवन में कई नवीन समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। साथ ही

समाज को भी उसकी शिक्षा को कोई लाभ नहीं मिल पा रह है। अधिवेशन का उदघाटन तिब्बती धर्मगुरु

दलाई लामा की प्रमुख उपस्थिति में किया गया।

इस अवसर पर संबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीपक बेहरा ने कहा कि एक सफल और उपयोगी जीवन के लिए हमें विषय ज्ञान की आवश्यकता सिर्फ 20 फीसदी ही होती है। शेष 80 प्रतिशत में जीवन जीने की कला की आवश्यकता होती है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान हमें सुविधा संपन्न बना रहा है, लेकिन प्राचीन ज्ञान-विज्ञान हमें आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाता है।

अधिवेशन में दलाई लामा एवं उपस्थित कुलपतियों के बीच संवाद हुआ। इस संवाद के दौरान क्वीसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रो. नूना, बेलगाम के प्रो. विवेक सावजी, प्रो. सीताराम राय, जर्मनी विश्वविद्यालय की डॉ. अदिति गोस्वामी, जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह, केरल के प्रो. आइजेक, प्रो. फुरकान कमर, शिलांग के प्रो.पी. श्रीवास्तव ने मानव मूल्य, उच्च शिक्षा तथा तकनीकी के संबंधित कई प्रश्न किए। इन प्रश्नों के उत्तर में दलाई लामा ने कहा कि करूणा है तो हम किसी का बुरा करने का विचार ही अपने मन में नहीं आने देंगे। व्यक्ति के मन को प्रशिक्षित करके करूणा का विकास संभव है। वैज्ञानिक प्रयोगों से इस बात को सिद्ध भी किया जा चुका है।

इस सत्र के बाद हुए तकनीकि सत्र में लेकसीटी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो.अनूप स्वरूप, भारती विद्यापीठ के कुलपति प्रो. मानिकराव सालुंके, आईआईटी बीएचयू के निदेशक प्रो. राजीव संगल ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता एसआरएम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संदीप संचेती ने की।